



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter -2 Shalok – 19 | श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय दो - श्लोक उन्नीस | PDF

अध्याय 2 – सांख्य योग

श्लोक 19

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ 19॥

सरल हिंदी में भावार्थ

हे अर्जुन!

जो व्यक्ति यह समझता है कि आत्मा का हत्यारा कोई हो सकता है, और जो व्यक्ति यह सोचता है कि आत्मा मारी गई है, दोनों ही इस परम सत्य को नहीं जानते।

असल में आत्मा न कभी मारी जा सकती है और न ही मारी जाती है। आत्मा अजर-अमर है।

विस्तृत व्याख्या

भगवान श्रीकृष्ण इस श्लोक में अर्जुन को आत्मा के अमरत्व



का महत्व बताते हैं।

शरीर, जिसे हम अपना अस्तित्व समझते हैं, नश्वर है; लेकिन इस शरीर में निवास करने वाली आत्मा शाश्वत है।

शरीर का अंत निश्चित है—यह जन्मता है और मरता है।

लेकिन आत्मा न जन्म लेती है और न मरती है।

जो लोग केवल शरीर को देखते हैं, वे भ्रमित रहते हैं और सोचते हैं कि आत्मा भी मारी जा सकती है।

इस श्लोक के अनुसार, वास्तविक ज्ञान वही है जो आत्मा की अमरता और अपरिवर्तनीयता को जानता है।

जब व्यक्ति यह समझ लेता है कि आत्मा अजर-अमर है, तो मृत्यु और हानि का भय उसके मन को प्रभावित नहीं करता। इसलिए युद्ध या किसी भी धर्म-कर्म में डर या संकोच नहीं होना चाहिए।

भगवान यहां यह भी समझा रहे हैं कि जीवन में कर्म का पालन करना ही महत्वपूर्ण है।

यदि हम आत्मा के अमर होने का ज्ञान ग्रहण कर लें, तो हम भय, मोह और दुर्बलता से ऊपर उठ जाते हैं।

अर्जुन को यह समझना आवश्यक है कि युद्ध केवल शरीर की लड़ाई नहीं है, बल्कि धर्म की रक्षा के लिए आवश्यक है।

पदों का भावार्थ

- यः – जो
- एनं – इस (आत्मा को)
- वेत्ति – जानता है



- हन्तारं – हत्यारे को
- यश्च – और जो
- ऐनं – इसे
- मन्यते हतम् – मरा हुआ मानता है
- उभौ तौ न विजानीतः – ये दोनों इसे सही रूप में नहीं जानते
- न आयं हन्ति न हन्यते – यह न मारा जा सकता है और न मारा जाता है

गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक जीवन और मृत्यु की वास्तविकता का गहरा ज्ञान देता है।

मनुष्य अपने शरीर को “मैं” समझ बैठता है, और इसी भ्रम के कारण मृत्यु का भय उसे विचलित करता है।

जब साधक यह समझता है कि उसका सच्चा अस्तित्व आत्मा है, जो न जन्म लेती है और न मरती है, तो वह भय, मोह और अनिश्चितता से मुक्त हो जाता है।

अहम, भय और संकोच को छोड़कर व्यक्ति केवल अपने धर्म और कर्तव्य में लीन रह सकता है।

आत्मा का ज्ञान उसे कर्मयोग और मोक्ष के मार्ग पर स्थिर बनाता है।

शरीर की क्षणभंगुरता उसे कभी भ्रमित नहीं कर सकती, क्योंकि उसका वास्तविक “मैं” अमर है।



श्लोक का संदेश

- आत्मा न कभी मरती है और न मारी जा सकती है।
- मृत्यु और हानि केवल शरीर तक सीमित हैं।
- सच्चा ज्ञान वही है जो आत्मा के अमरत्व को जानता है।
- अपने धर्म और कर्तव्य से डरकर पीछे न हटो।
- आत्मबोध और निर्भयता से कर्म करते हुए जीवन में स्थिरता और शांति प्राप्त होती है।

RELATED ARTICLE



Chapter -2 Shalok – 17



Chapter -2 Shalok – 18



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

